

**Syllabus for the Recruitment Test for the post of
Assistant Professor (College Cadre) in the subject of**

Sanskrit

विषय : संस्कृत

पाठ्यक्रम

इकाई—I : वैदिक साहित्य :

(क) संहिताएँ : निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन:—

1. ऋग्वेद— अग्नि [1.1] ; सवितृ [1.35] ; विष्णु [1.154] ; इन्द्र [2.12] ;
रुद्र [2.33] ; बृहस्पति [4.50] ; उषा: [5.80] ; वरुण [7.88] ; सोम [9.80] ;
पुरुष [10.90] ; हिरण्यगर्भ [10.121] ; वाक् [10.125] ; नासदीय [10.129] ।
संवाद सूक्त— विश्वामित्र-नदी [3.33] ; यम-यमी [10.10] ;
पुरुवा-उर्वशी [10.95] ; सरमा-पणि [10.108] ।

2. अथर्ववेद— पृथिवी [12.1] ।

(ख) ब्राह्मण एवम् आरण्यक : सामान्य लक्षण ; विशेषताएँ ; आख्यान— शुनःशेष ;
पञ्चमहायज्ञ ।

(ग) उपनिषद् : विषयवस्तु तथा प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन, विशेषतः
निम्नलिखित उपनिषदों के सन्दर्भ में :
ईश ; केन ; कठ ; बृहदारण्यक ; तैत्तिरीय ।

(घ) वेदाङ्ग : निम्नलिखित वेदाङ्गों का सामान्य एवं संक्षिप्त परिचय :
शिक्षा ; कल्प ; व्याकरण ; निरुक्त ; छन्दः ; ज्योतिष ।

(ङ) निरुक्त (अध्याय 1 और 2) :

चार पद— नाम का विचार ; आख्यात का विचार ; उपसर्गों के अर्थ ; निपातों की
कोटियाँ । क्रिया के छह रूप (षड्भावविकार) । निरुक्त के अध्ययन के उद्देश्य ।
निर्वचन के सिद्धान्त ।

निम्नलिखित शब्दों के निर्वचन :

आचार्य ; वीर ; हृद ; गो ; समुद्र ; वृत्र ; आदित्य ; उषस् ; मेघ ; वाक् ; उदक ;
नदी ; अश्व ; अग्नि ; जातवेदस् ; वैश्वानर ; निघण्टु ।

निरुक्त (अध्याय 7—दैवत काण्ड) :

मन्त्रों के प्रकार । देवताओं का स्वरूप । देवताओं की संख्या ।

(च) वैदिक व्याकरण एवं वेद-व्याख्या-पद्धति :

पदपाठ । स्वर— उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित । वैदिक एवं लौकिक संस्कृत में अन्तर । वैदिक व्याख्या-पद्धति— प्राचीन एवम् अर्वाचीन ।

(छ) वैदिक साहित्य का इतिहास :

वैदिक काल के विषय में विभिन्न सिद्धान्त— मैक्समूलर ; ए० वेबर ; जैकोबी ; बालगंगाधर तिलक ; एम्० विन्टरनिट्ज ; भारतीय परम्परागत विचार ।

इकाई—II : व्याकरण एवं भाषाविज्ञान :

(क) व्याकरण :

I. वरदराज-कृत लघुसिद्धान्तकौमुदी—

1. परिभाषाएँ : संहिता ; गुण ; वृद्धि ; प्रातिपदिक ; नदी ; धि ; उपधा ; अपृक्त ; गति ; पद ; विभाषा ; सवर्ण ; टि ; प्रगृह्य ; सर्वनामस्थान ; निष्ठा ।
2. समास : सोदाहरण सूत्र-व्याख्या एवं सूत्रोल्लेखपूर्वक रूपसिद्धि ।

II. भट्टोजिदीक्षित-कृत सिद्धान्तकौमुदी—

1. तिङन्त प्रकरण— √भू एवम् √एध् : सोदाहरण सूत्र-व्याख्या एवं सूत्रोल्लेखपूर्वक रूपसिद्धि ।
2. परस्मैपद-विधान : सोदाहरण सूत्र-व्याख्या ।
3. आत्मनेपद-विधान : सोदाहरण सूत्र-व्याख्या ।
4. कृदन्त प्रकरण (कृत्य प्रक्रिया मात्र) : सोदाहरण सूत्र-व्याख्या एवं सूत्रोल्लेखपूर्वक रूपसिद्धि ।
5. तद्धित प्रकरण (मत्वर्थीय मात्र) : सोदाहरण सूत्र-व्याख्या एवं सूत्रोल्लेखपूर्वक रूपसिद्धि ।
6. कारक प्रकरण : सोदाहरण सूत्र-व्याख्या एवं सूत्रोल्लेखपूर्वक कारक एवं विभक्ति का प्रतिपादन ।
7. स्त्री प्रत्यय : सोदाहरण सूत्र-व्याख्या एवं सूत्रोल्लेखपूर्वक रूपसिद्धि ।

(ख) भाषाविज्ञान :

1. भाषा की परिभाषा एवं प्रकार ।
2. भाषा तथा वाक् में अन्तर ।
3. भाषा और बोली में अन्तर ।
4. वाक्य का लक्षण तथा भेद ।
5. भाषाओं का वर्गीकरण (परिवारमूलक एवम् आकृतिमूलक) ।

6. भारोपीय भाषा-परिवार का सामान्य एवं संक्षिप्त परिचय ।
7. भारतीय आर्यभाषा की तीन अवस्थाएँ ।
8. भाषा-प्रक्रिया एवं ध्वनियों का वर्गीकरण : स्पर्श, संघर्षी, अर्धस्वर एवं स्वर ।
9. संस्कृत ध्वनियों के विशेष सन्दर्भ में मानवीय ध्वनि-यन्त्र ।
10. ध्वनि-परिवर्तन के कारण ।
11. ध्वनि-नियम (ग्रिम, ग्रासमान तथा वर्नर) ।
12. अर्थपरिवर्तन की दिशाएँ तथा कारण ।

इकाई—III : दर्शन :

- I. ईश्वरकृष्ण-कृत सांख्यकारिका : व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न—
सत्कार्यवाद ; पुरुष-स्वरूप ; प्रकृति-स्वरूप ; सृष्टिक्रम ; प्रत्ययसर्ग ; कैवल्य ।
- II. सदानन्द-कृत वेदान्तसार : व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न—
अनुबन्ध-चतुष्टय ; अज्ञान ; अध्यारोप-अपवाद ; लिङ्गशरीरोत्पत्ति ; पञ्चीकरण ;
विवर्त ; जीवन्मुक्ति ।
- III. केशवमिश्र-कृत तर्कभाषा : व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न—
पदार्थ ; कारण ; प्रमातृ ; प्रमेय ; प्रमाण (प्रत्यक्ष ; अनुमान ; उपमान ; शब्द) ;
प्रमिति ।
- IV. लौगाक्षिभास्कर-कृत अर्थसंग्रह : व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न ।
- V. योगसूत्र : व्यासभाष्य—
चित्तभूमि ; चित्तवृत्तियाँ ; ईश्वर का स्वरूप ; योगाङ्ग ; समाधि ; कैवल्य की
अवधारणाओं का अध्ययन ।

इकाई—IV : संस्कृत साहित्य एवं काव्यशास्त्र :

- I. संस्कृत साहित्य :
व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न—
 1. पद्य : रघुवंश (प्रथम तथा चतुर्दश सर्ग); मेघदूत ; किरातार्जुनीय (प्रथम सर्ग) ;
शिशुपालवध (प्रथम सर्ग) ; नैषधीयचरित ; बुद्धचरित ।
 2. गद्य : दशकुमारचरित (अष्टमोच्छवासः) ; हर्षचरित ;
कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्तः) ।

3. नाटक : स्वप्नवासवदत्ता ; अभिज्ञानशाकुन्तल ; मृच्छकटिक ; उत्तररामचरित ; मुद्राराक्षस ; रत्नावली ; वेणीसंहार ।
 4. रामायण एवं महाभारत : समीक्षात्मक प्रश्न—
 - (क) रामायण :
रामायण का क्रम । रामायण में आख्यान । रामायणकालीन समाज । परवर्ती ग्रन्थों के लिये रामायण एक प्रेरणा-स्रोत । रामायण का साहित्यिक महत्त्व ।
 - (ख) महाभारत :
महाभारत का क्रम । महाभारत में आख्यान । महाभारतकालीन समाज । परवर्ती ग्रन्थों के लिये महाभारत एक प्रेरणा-स्रोत । महाभारत का साहित्यिक महत्त्व ।
- II. काव्यशास्त्र :
1. काव्यप्रकाश—
काव्यलक्षण ; काव्यप्रयोजन ; काव्यहेतु ; काव्यभेद ।
अलंकार— अनुप्रास ; श्लेष ; वक्रोक्ति ; उपमा ; रूपक ; उत्प्रेक्षा ; समासोक्ति ; अपह्नुति ; निदर्शना ; अर्थान्तरन्यास ; दृष्टान्त ; विभावना ; विशेषोक्ति ; संकर ; संसृष्टि ।
 2. साहित्यदर्पण—
काव्य की परिभाषा ; काव्य की अन्य परिभाषाओं का खण्डन ।
शब्दशक्ति— संकेतग्रह ; अभिधा ; लक्षणा ; व्यञ्जना ।
रस (रस-भेद स्थायी भावों सहित) ।
रूपक के प्रकार ।
नाटक के लक्षण ।
महाकाव्य के लक्षण ।

